



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

श्रावाकारम्

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उपखण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राचिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 221] नई विस्ती, नूक्कार, दिसम्बर 10, 1971/अग्रह्याण 19, 1893

No. 221] NEW DELHI, FRIDAY, DECEMBER 10, 1971/AGRAHYANA 19, 1893

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या दी जाती है जिससे कि वह अस्त्रगत्यानन के रूप में रखा जा सके।

Separate paging is given to this Part in order that it may be filed as a separate compilation

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue and Insurance)

NOTIFICATION

CENTRAL EXCISES

New Delhi, the 10th December 1971

G.S.R. 1867.—In exercise of the powers conferred by sub-rule (1) of rule 8 of the Central Excise Rules, 1944, read with sub-section (3) of section 3 of the Mineral Products (Additional Duties of Excise and Customs) Act, 1958 (27 of 1958), the Central Government hereby makes the following further amendment to the notification of the Government of India in the Ministry of Finance (Department of Revenue and Insurance) No. 141/66-Central Excises, dated the 17th September, 1966, namely:—

In the proviso to the said notification, for clause (e), the following clause shall be substituted, namely:—

“(e) it contains more than 0.75 per cent. by weight of any bituminous substance.”

[No. 203/71-CE-F. No. 86/3/71-CX-3.]

P. R. KRISHNAN, Under Secy.

वित्त मंत्रालय

(राजस्व और बीमा विभाग)

प्रवितृत्वना

केन्द्रीय उत्पाद-शुल्क

नई दिल्ली, 10 दिसम्बर, 1971

सांकेति 1867.—खनिज-उत्पाद (प्रतिशिक्त उत्पाद और सीम शुल्क) अधिनियम, 1958 (1958 का 27) की धारा 3 की उपधारा (3) के माथ पठित केन्द्रीय उत्पाद शुल्क नियम, 1944 के नियम 8 के उपनियम (1) द्वारा प्रदत्त जकियों का प्रबोग करने हुए केन्द्रीय सरकार भारत गवर्नर के वित्त मंत्रालय (राजस्व और बीमा विभाग) की प्रधिकारता में 141/66—केन्द्रीय उत्पाद शुल्क, तारीख 17 मित्सबर, 1966 में और आगे एतेहा निम्नलिखित मंशोधन करते हैं, अर्थात् :—

उक्त अधिकारता के पर्यन्त में खण्ड (४०) के लिए निम्नलिखित खण्ड प्रतिस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“(४०) इस में कोई विस्तृत पदार्थ वजन के ०.७५ प्रतिशत से अधिक अन्तर्दिष्ट है।”

[नं० 203/71-फा० मं० 86/3/71-सी० एस०-३]

पी० आर० कृष्णन्, अवर सचिव।